क्या आप
साम्प्रदायिक हैं?
स्वयं प्रकाश

धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के पक्ष में

जन विज्ञान आंदोलन के एक हिस्से के रूप में 'भारत ज्ञान विज्ञान समिति' साक्षरता और शिक्षा के क्षेत्र में देश भर में सक्रिय है। हमारे लिए साक्षरता का मतलब महज़ अक्षर या अंक ज्ञान हासिल करना नहीं है। हम चाहते हैं लोग साक्षर बने और जाने कि उनकी बदहाली के कारण क्या हैं? विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए वे एकजुट हों।

जनता की सोच वैज्ञानिक दृष्टियुक्त बनाना हमारा मकसद है। हमारे आसपास की घटनाओं और परिस्थितियों के बारे में तार्किक विश्लेषण ज़रूरी होता है, लेकिन हम पाते हैं कि अज्ञान, जानकारी का अभाव और भ्रांतियां हमें सही निर्णय तक नहीं पहुंचने देती। इन हालात के खिलाफ हस्तक्षेप ज़रूरी है। अतः नवसाक्षरों के लिए 'जनवाचन' और बच्चों के लिए 'बालवाचन' पुस्तकमालाओं के साथ ही हम समय-समय पर इस तरह की पुस्तकें भी प्रकाशित करते हैं, जो समाज को चेतना सम्पन्न बनाने वाले किसी विषय पर हो।

हमारे देश में विविध धर्म हैं। उनको मानने वालों के भिन्न-भिन्न विचार और पूजा पद्धतियां हैं। धार्मिक सौहार्द के उदाहरण हैं तो साम्प्रदायिक-अलगाव की हकीकत भी हमारे सामने है। मुसलमानों के बारे में अपर्याप्त जानकारियां, गलत सूचनाएं तथा अपूर्ण आंकड़ें ख़ासतौर पर हिंदुओं को भ्रमित कर देते हैं। इससे समाज में वैमनस्य फैलता हैं। अलगाव बढ़ता हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में सहज भाषा और रोजमर्रा के उदाहरणों से ऐसे ही मुद्दों को उठाया गया है। हमें उम्मीद है कि अपनी कहानियों से समाज के विभिन्न मसलों पर अपनी बात कहने वाले हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार स्वयं प्रकाश द्वारा लिखी गयी इस पुस्तक से हमारे पाठक लाभान्वित होंगे और भारतीय समाज के रंग-बिरंगी, धर्मनिरपेक्ष और जनतांत्रिक ताने-बाने को सुरक्षित बनाये रखने के प्रयासों में सहयोगी बनेंगे।

आशा मिश्र
सचिव
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

क्या आप साम्प्रदायिक हैं?

भारत में रहने वाले ज़्यादातर लोग शांतिप्रिय, धर्मप्रेमी, सज्जन और संस्कारवान हैं। वे इज्जत से दो रोटी कमाना चाहते हैं और अपने बाल-बच्चों के साथ एक सीधा-सच्चा सुखी जीवन जीना चाहते हैं। उनकी महत्वाकांक्षाएं सीमित हैं और वे लूट-खसोट करने वालों को अच्छा नहीं समझते।

उनमें से अधिकांश को हत्या का कोई अनुभव नहीं है। उनमें से ज़्यादातर ने सपने में भी किसी आदमी को जान से नहीं मारा। वे तो पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों तक से प्यार करते हैं। उनके लिए तो नदियां और पहाड़ भी ईश्वर के बनाये हुए हैं। वे तो सांप और बिच्छू को भी नहीं मारना चाहते।

क्या ये लोग साम्प्रदायिक हैं?

शायद नहीं।

लेकिन अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए पिछले कुछ सालों में इनके दिमाग में कुछ सवाल डाल दिये गये हैं। सवालों की प्रकृति ऐसी है कि उन्होंने इनको परेशान और भ्रमित कर दिया है। इनके घर-दफ्तर, पास-पड़ोस और नाते-रिश्तेदारों में कोई नहीं जो इन सवालों के ठीक जवाब दे सके। और जब तक इन सवालों के साफ और सीधे जवाब नहीं मिल जाते, ये दिमागी उलझन के शिकार बने रहेंगे और निहित राजनीतिक स्वार्थों के हाथ में खेलते रहेंगे।

आइये देखें ये सवाल क्या हैं?

1. क्या हिन्दू होना गुनाह है?
2. क्या हिन्दू होने पर गर्व करना गलत है?
3. क्या हिन्दुओं को संगठित और शक्तिशाली नहीं होना चाहिए?
4. राम मंदिर हिन्दुस्तान में नहीं बनेगा तो और कहां बनेगा?
5. क्या बाबरी मस्ज़िद गुलामी की निशानी नहीं थी?

आइये, हम अपने तरीके से इन सवालों के सीधे, सरल और साफ जबाव ढूंढने की कोशिश करते हैं।

क्या हिन्दू होना गुनाह है?

बिल्कुल नहीं। हम हिन्दू हैं तो एक बहुत पुरानी परम्परा के वारिस हैं। जो कहते हैं कि हम कायर हैं, आसानी से दब जाते हैं और हर कोई हमारा फ़ायदा उठा लेता है, वे ठीक नहीं कहते।

क्या हिन्दू होने पर गर्व करना ग़लत है?

हां। ग़लत है।

हमारा हिन्दू होना मात्र एक संयोग है।

यदि कहीं कोई प्रतियोगिता होती और उसके विजेता को ही हिन्दू माना जाता, और हम वह प्रतियोगिता जीते होते

तो हिन्दू होने पर गर्व करना शायद ठीक होता।

यदि पैदा होने से पहले हमसे किसी ने पूछा होता कि तुम किस धर्म में पैदा होना चाहते हो, और हमने कहा होता कि हम हिन्दू धर्म में ही पैदा होना चाहते हैं,

तब इस पर गर्व करना शायद ठीक होता।

यदि हिन्दू धर्म दुनिया में सबसे अलग और ऊंचा होता

यदि हिन्दुओं में दहेज के लिए बहुओं को न जलाया जाता

यदि हिन्दुओं में लाखों विधवाएं दर-दर की ठोकरें न खा रही होतीं

यदि हिन्दुओं में छुआछूत की प्रथा न होती

यदि हिन्दुओं के मंदिरों में करोड़ों-अरबों की सम्पत्ति होते हुए भी लाखों भिखारी न होते...

तब शायद हिन्दू होने पर गर्व करना ठीक होता।

यदि हिन्दू दुनिया में सबसे साफ-सुथरे होते

यदि हिन्दुओं में कोई भ्रष्टाचारी न होता

यदि हिन्दुओं में अंधविश्वास और टोना-टोटका न होता

यदि हिन्दू दुनिया की सबसे पढ़ी-लिखी और रोशन खयाल कौम होती।

तब शायद हिन्दू होने पर गर्व करना ठीक होता।

लेकिन ऐसा तो है नहीं।

हिन्दुओं में राम हैं, तो रावण भी हैं।

कृष्ण हैं, तो कंस भी हैं

कौरव हैं, तो पाण्डव भी हैं

गांधी हैं, तो गोडसे भी हैं

पृथ्वीराज चौहान हैं, तो जयचंद भी हैं

लाल बहादुर शास्त्री हैं, तो हर्षद मेहता भी हैं

बाबा आम्टे हैं, तो मधु कोड़ा भी हैं

हर धर्म में अच्छे-बुरे दोनों तरह के लोग होते हैं।

फिर हिन्दू होने पर गर्व कैसा?

क्या हिन्दुओं को संगठित और शक्तिशाली नहीं होना चाहिए?

जरूर होना चाहिए। भारत में हिन्दू बहुसंख्यक हैं। यदि हिन्दू संगठित और शक्तिशाली होंगे तो देश की बड़ी संख्या शक्तिशाली होगी।

हिन्दुओं को संगठित होने से कौन रोक रहा है?

कोई नहीं।

लेकिन हिन्दुओं को संगठित करने की कोशिश कौन कर रहा है?

कोई नहीं।

हिन्दुओं के संगठित होने में सबसे बड़ी बाधा क्या है?

जातिवाद।

हम ऊंचे, तुम नीचे। हम ब्राह्मण, तुम बनिया। या कायस्थ। या दलित। ये हमारा मंदिर ये तुम्हारा। हम तुम्हारी बेटी नहीं लेंगे।

ब्राह्मणों में भी कोई नीचा कोई ऊंचा।

क्या ये भेद समाप्त नहीं किये जा सकते?

यदि सभी हिन्दुओं में बिना रोकटोक रोटी-बेटी का नाता होने लगे तो हिन्दू एक-दूसरे के कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होंगे।

तब उनसे ज्यादा शक्तिशाली कौन होगा?

किसकी हिम्मत होगी जो उनकी तरफ आंख उठाकर देखे।

जातिवाद को समाप्त होना चाहिए न?

चलिए हम खुद पहल करें।

अपने नाम के आगे से जाति सूचक पुछल्ला निकाल फेंकें।

और हर अंतरजातीय विवाह में सपरिवार जायें, बधाई और आशीर्वाद दें।

राम मंदिर हिन्दुस्तान में नहीं बनेगा तो कहां बनेगा?

हमारे देश में लाखों राम मंदिर हैं।

बहुत सारे मंदिर सरकारी ज़मीन पर गैर कानूनी तौर पर बन गये हैं। अनेक मंदिर सड़क के बीचोबीच बन गये हैं। उनके कारण दुर्घटनाएं होती हैं। पहले गुजरात में ऐसे अनाधिकृत मंदिरों को हटाने की ज़ोरदार मुहिम चलायी गयी थी। लेकिन उसे बीच में ही छोड़ना पड़ा।

इतने राम मंदिरों के बावजूद एक और राम मंदिर क्यों चाहिए?

क्या इस पैसे से अनाथालय, विधवाश्रम, गौशाला, जड़ी-बूटी उद्यान, चिकित्सालय, शोध संस्थान या स्कूल बनाना हिन्दुओं के लिए ज्यादा उपयोगी नहीं रहेगा?

फिर भी यदि किसी को मंदिर ही बनाना है तो जगह की कोई कमी नहीं है। मंदिर बनाने के लिए मस्जिद को तोड़ना क्यों जरूरी है?

क्या बाबरी मस्जिद गुलामी की निशानी नहीं थी?

अगर बाबरी मस्जिद को गुलामी की निशानी माना जा सकता है तो ताजमहल, लालकिला, कुतुबमीनार और फतेहपुर सीकरी को क्यों नहीं? क्या इन्हें भी तोड़-ताड़कर धूल में मिला देना चाहिए?

अगर बाबरी मस्जिद को गुलामी की निशानी माना जा सकता है तो राष्ट्रपति भवन, इंडिया गेट, संसद भवन और गेट वे ऑफ इंडिया को क्यों नहीं?

क्या इन इमारतों को भी गिराने के लिए कारसेवक भेजे जाने चाहिए?

याद रखिए

ग्रांड-ट्रंक रोड शेरशाह सूरी ने बनवाई थी।

सारे हिन्दुस्तान की रेलें अंग्रेजों ने चलायी थीं।

पांडीचेरी फ्रांसीसियों ने बसायी थी।

काग़ज का इस्तेमाल चीन ने सिखाया था।

क्या इन सबको गुलामी की निशानी मानकर नष्ट कर देना चाहिए?

साम्प्रदायिकता क्या होती है ?

साम्प्रदायिकता एक भावना है जिसने एक मानसिक बीमारी का रूप ले लिया है।

साम्प्रदायिक व्यक्ति सोचता है-एक सम्प्रदाय के सभी व्यक्तियों के हित एक समान होते हैं।

जैसे कि- सारे हिन्दू राम की पूजा करते हैं।

या जैसे कि- सारे मुसलमान विदेशी हैं।

या जैसे कि- सारे ईसाई, हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन में लगे रहते हैं।

क्या ये बातें ठीक हो सकती हैं?

बहुत सारे हिन्दू कृष्ण की पूजा करते हैं।

बहुत से हिन्दू शिव या दुर्गा के उपासक हैं।

हिन्दुओं की एक बड़ी संख्या आर्य समाजी है।

आर्य समाजी किसी देवी-देवता की पूजा नहीं करते।

अनेक हिन्दू नास्तिक हैं। वे ईश्वर को ही नहीं मानते।

ज्यादातर मुसलमान एक या दो पीढ़ी पहले तक हिन्दू थे।

ज्यादातर ईसाई भी एक या दो पीढ़ी पहले तक हिन्दू थे।

वे ब्राह्मणों या सवर्णों के अत्याचार से तंग आकर

या गरीबी से लाचार होकर

दूसरे धर्मों में चले गये।

इन्हें पराया मानना साम्प्रदायिकता है।

इन्हें अपने से अलग और नीचा समझना साम्प्रदायिकता है।

इनसे छुआछूत बरतना साम्प्रदायिकता है।

आइये अब कुछ ऐसी बातों पर विचार करते हैं जो अक्सर हमारे कानों में डाली जाती हैं, लेकिन जिन पर हम विचार नहीं करते। विचार नहीं करते इसलिए उन्हें चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं।

हम यदि इन बातों का समर्थन नहीं भी करते, तो विरोध भी नहीं करते।

अलग हट जाते हैं। हमें इन बातों से क्या?

लेकिन ये बातें हमारे दिमाग में घुसकर बैठ जाती हैं।

- मुसलमान लोग मांस-मछली खाते हैं इसलिए जन्म से ही कट्टर होते हैं। हिन्दू भोले और डरपोक होते हैं।
- सारे आतंकवादी मुसलमान होते हैं।
- मुसलमानों ने इस देश के लिए क्या किया? ये खाते यहां की हैं बजाते वहां की हैं। मुसलमानों से हमारे देश को क्या मिला?
- पाकिस्तान हमारे यहां आतंकवादी भेजकर आतंक फैलाता है। पाकिस्तान से आरपार लड़ाई करके उसे खत्म कर देना चाहिए!

आइये देखें ये बातें कितनी सही है?

- जहां तक मांसाहार की बात है, मांस-मछली मुसलमान ही नहीं हिन्दू भी खाते हैं, ईसाई, पारसी और सिक्ख भी खाते हैं।

तटीय क्षेत्रों अर्थात् बंगाल से लेकर महाराष्ट्र तक के अधिकांश

ब्राह्मण मछली खाते हैं।

चीनी–जापानी–कोरियाई–रूसी–फ्रांसीसी–जर्मन–अंग्रेज और अफ्रीकी सब मांस–मछली खाते हैं।

क्या इन सबको जन्म से कट्टर माना जा सकता है?

कई लोगों ने स्वेच्छा से मांसाहार छोड़ दिया।

क्या मांसाहार छोड़ते ही वे उदार और सहिष्णु हो गये?

जन्म के समय सारे बच्चे एक समान होते हैं।

भिन्न बनते हैं वे अलग–अलग परवरिश, परिवेश, सोहबत और शिक्षा से।

- सारे आतंकवादी मुसलमान नहीं होते और सारे मुसलमान भी आतंकवादी नहीं होते।
- तो फिर गिनना शुरू कीजिए –

हैदर अली, टीपू सुल्तान, अशफाकउल्ला खां, हज़रत निजामुद्दीन, ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, हाजी अली, कुलीकुतुब शाह, मीर, मोमिन, जोश, गालिब, फ़ैज, रहीम, जायसी, नज़ीर बनारसी, अब्दुल गफ्फार खां, मौलाना आज़ाद, सर सैय्यद, काजी नज़रूल इस्लाम, अल्लामा इक़बाल, इस्मत चुगताई, सआदत हसन मंटो, अलाउद्दीन खां, बड़े गुलाम अली खां, विलायत खां, अल्लारक्खा, जाकिर हुसैन, अमजद अली, दिलीप कुमार, मीना कुमारी, मधुबाला, नर्गिस, निगार, निम्मी, नूरजहां, मुबारक बेगम, महबूब, नौशाद, कमाल अमरोही, साहिर लुधियानवी, मजरूह सुल्तानपुरी, कैफ़ी आज़मी, शकील बदायूंनी, खुमार बाराबंकवी, राही मासूम रज़ा, मोहम्मद रफी, तलत महमूद, शमशाद बेगम, बेगम अख्तर, ए. आर. रहमान, नवाब पटौदी, सलीम दुर्रानी, मोहम्मद अजहरूद्दीन, ज़फर इकबाल, असलम शेर खान, सानिया मिर्जा, मकबूल फिदा हुसैन... इस सूची को मैं नहीं बढ़ाऊंगा।

मैं चाहता हूं इस सूची को आप बढ़ाएं।

कौन से मुसलमान की बात करते हो भाई?

यहां एक महत्वपूर्ण सवाल उठता है।

जब हम कहते हैं कि मुसलमान ऐसे हैं या मुसलमान वैसे हैं

तो हम किस मुसलमान की या कौन से मुसलमानों की बात कर रहे होते हैं?

क्या सारे मुसलमान एक जैसे होते हैं?

क्या अफ्रीका के और चीन के मुसलमान एक जैसे हैं?

क्या अमरीका के और बांग्लादेश के मुसलमान एक जैसे हैं?

क्या असम के और केरल के मुसलमान एक जैसे हैं?

क्या तमिलनाडु के और गुजरात के मुसलमान एक जैसे हैं?

जैसे सब जगह के हिन्दू एक जैसे नहीं हैं

जैसे सब जगह के ईसाई एक जैसे नहीं हैं

वैसे ही सब जगह के मुसलमान एक जैसे नहीं हैं

इसलिए मुसलमानों के बारे में बात करते समय

सामान्यीकरण नहीं करना चाहिए।

पाकिस्तान और हम

पाकिस्तान हमारा पड़ोसी है और रहेगा।

हमारे चाहने से वह उठकर कहीं दूर नहीं चला जायेगा।

हम दोस्त बदल सकते हैं

दुश्मन बदल सकते हैं

लेकिन पड़ोसी नहीं बदल सकते।

भावनाएं चाहे जैसी फैला ली जायें, लेकिन सच बात यह है कि

न हम पाकिस्तान को भारत में मिला सकते हैं

न नक्शे पर से उसका नामोनिशान मिटा सकते हैं।

बहुत दिनों तक दोनों देशों के सदाशय लोग आशा करते रहे कि

एक न एक दिन भारत और पाकिस्तान को बंटवारे की भूल समझ

में आ जाएगी।

और दोनों फिर से एक हो जायेंगे।

कम से कम एक भारत-पाकिस्तान महासंघ तो बना ही लेंगे।

या कम से कम यूरोपियन कॉमन मार्केट की तर्ज पर

एशियन कॉमन मार्केट तो बना ही लेंगे।

फिर हमारी आर्थिक शक्ति को कौन चुनौती दे सकेगा?

फिर हमारी संयुक्त हॉकी या क्रिकेट टीम से कौन टक्कर ले सकेगा? फिर जो पैसा भारत और पाकिस्तान से पश्चिमी देशों को जाता है

वह दोनों देशों के विकास में काम आएगा।

दोनों देशों से गरीबी खत्म होगी।

जनता खुशहाल होगी।

हथियारों का, फौज का अपार खर्च बचेगा।

आपसी व्यापार फलेगा-फूलेगा गलतफहमियां दूर होंगी।

हमारे बच्चे सुबह दिल्ली में भटूरे खाएंगे

और शाम को लाहौर में चाय पियेंगे।

क्या यह सपना अब भी सच हो सकता है?

लेकिन कैसे?

आपसी नफरत से? या परस्पर प्यार से?
इंग्लैण्ड में भारत-पाकिस्तान के बच्चे मिलजुल कर रहते हैं।
अमरीका में भारत-पाकिस्तान के लोग मिलजुल कर रहते हैं।
यूरोप में भारत-पाकिस्तान की महिलाएं बहनापे से रहती हैं।
अफ्रीका में भारत-पाकिस्तान के बच्चे साथ-साथ खेलते हैं।
हम दूसरों के मुल्क में प्रेम से रह सकते हैं
तो अपने खुद के मुल्क में हमें क्या हो जाता है?
कौन हमारे दिलों में नफरत के बीज बो रहा है?

और क्यों? सिर्फ कुर्सी के लिए?

हम इनके हाथों में खेलने से कब इंकार करेंगे?

तुम पहले हिन्दुस्तानी हो या पहले मुसलमान?

अक्सर मुसलमानों को छेड़ने के लिए उनसे यह सवाल पूछा जाता है।

वे इसका कोई सीधा जवाब नहीं दे पाते।

क्यों?

डर के मारे।

अल्लाह का डर और बहुसंख्यकों का डर।

कहेंगे पहले मुसलमान हैं-तो बहुसंख्यक नाराज़ हो जाएंगे।

कहेंगे पहले हिन्दुस्तानी हैं-तो अल्लाह नाराज हो जाएंगे।

मुझे कोई डर नहीं है।

मैं इस सवाल का जवाब देता हूं।

वैसे तो यह सवाल ही बेहूदा है।

यह वैसा ही सवाल है जैसा शिवसेना के बाल ठाकरे ने सचिन

तेंदुलकर से पूछा था-''तू पहले महाराष्ट्रीयन है या पहले भारतीय?

लेकिन कोई बात नहीं।

मैं इस बेहूदा सवाल का भी सीधा जवाब दूंगा।

भारत के मुसलमान पहले भारतीय है फिर मुसलमान।

भारत के मुसलमानों और दुनिया के दूसरे मुसलमानों में क्या फर्क है?

भारत के मुसलमान मुहर्रम पर ताजिये निकालते हैं।

बाहर के मुसलमान ताजिये नहीं निकालते।

भारत के मुसलमान दरगाह पर चादर चढ़ाते हैं।

बाहर के मुसलमान दरगाह पर चादर नहीं चढ़ाते।

भारत के मुसलमान कव्वाली सुनते-बनाते-गाते हैं।

बाहर के मुसलमान कव्वाली नहीं सुनते-बनाते-गाते।

भारत के मुसलमान शादी-बारात में बैण्ड बजाते हैं।

दुनिया में और कहीं मुसलमान ऐसा नहीं करते।

भारत के मुसलमान रेडियो-टेप पर संगीत सुनने या फिल्म देखने में परहेज नहीं करते।

दुनिया के कई देशों में मज़हबी मुसलमान इसे कुफ्र समझते हैं।

भारत में मुस्लिम फकीरों के उर्स पर मेले लगते हैं।

बाहर किसी उर्स पर कोई मेला नहीं लगता।

क्या हिन्दू और मुसलमान शान्तिपूर्वक साथ-साथ नहीं रह सकते?

कुछ लोगों का कहना है कि हिन्दू और मुसलमान एक साथ नहीं रह सकते। अपनी बात के समर्थन में वे कुछ बचकाना तर्क देते हैं।

जैसे –

- हिन्दू चोटी रखते हैं, मुसलमान दाढ़ी रखते हैं।
- हिन्दू पूरब की तरफ मुंह करके पूजा करते हैं जबकि मुसलमान पश्चिम की तरफ मुंह करके पूजा करते हैं।
- हिन्दू हिन्दी लिखते हैं जो बाएं से दाहिनी तरफ चलती है।
- मुसलमान उर्दू लिखते हैं जो दाहिने से बायीं तरफ चलती है।
- हिन्दू अपने मुर्दे जलाते हैं, मुसलमान दफ़नाते हैं।
- हिन्दू पालथी मार कर बैठते हैं, मुसलमान घुटने पीछे मोड़कर बैठते हैं।
- हिन्दू सीधे तवे की सिकी रोटी खाते हैं, मुसलमान उल्टे तवे की।
- हिन्दू उदार होते हैं, मुसलमान कट्टर होते हैं।

क्या इन बातों में कोई दम है? क्या वास्तव में ये महत्वपूर्ण बाते हैं? क्या सचमुच इन बातों का जवाब देना चाहिए? क्या ऐसी बातों को गंभीरता से लेना भी चाहिए?

शायद नहीं।

लेकिन दो बातों की यहां याद दिलाना शायद अनुचित नहीं होगा।

- बाबा आम्टे को कौन नहीं जानता? वे पेशे से डॉक्टर थे। उनका बेटा-बहू भी डॉक्टर हैं। उन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए 'आनंद आश्रम' बनाया ।

  'आनंद आश्रम' में जब कोई भी मरता है तो उसे जलाया नहीं, दफ़नाया जाता है। और पास ही उसकी स्मृति में एक पेड़ लगाया जाता है। बाबा आम्टे को भी दफ़नाया गया।

  पर्यावरण विनाश से इस धरती को बचाने के लिए क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं है कि हिन्दू भी अपने मुर्दों को जलाने की बजाय दफ़्ना

दें और पास ही उसकी याद में एक पेड़ लगा दें?

■ पता नहीं हिन्दू कब उदार थे। राम ने दण्डकारण्य से राक्षसों का सफाया कर दिया था। पेड़ के पीछे से छिपकर बाली को मारा था। तपस्या करते शम्बूक की हत्या की थी। गर्भवती पत्नी को धोखे से घर से निकाला था। फिर भी वे मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाये।

कृष्ण ने अपने मामा कंस को मारा था।

महाभारत में भाइयों ने भाइयों का खून बहाया था।

गोड्से ने अहिंसा के पुजारी गांधी को नज़दीक से गोलियां मारी थीं। इन्दिरा गांधी को उन्हीं के अंगरक्षकों ने बेरहमी से मार डाला था।

निहत्थे राजीव गांधी के एक आत्मघाती महिला ने चीथड़े उड़ा दिये थे। दिल्ली में हजारों सिक्खों को मार डाला गया था।

गुजरात में गैस के सिलेण्डर छोड़कर मुसलमानों के मोहल्ले जला दिये गये थे।

गर्भवती स्त्रियों तक को नहीं छोड़ा गया था।

फादर ग्राहम स्टान्स और उनके दो मासूम बच्चों को कार में बंद कर जिंदा जला दिया गया था।

कम से कम अब तो हिन्दुओं को नहीं कहना चाहिए कि वे उदार हैं।

क्या हिन्दू और मुसलमान साथ-साथ नहीं रह सकते ?

हिन्दू और मुसलमान सदियों से प्रेमपूर्वक साथ-साथ रहते आये हैं। हिन्दुओं की बेटियां कांच की चूड़िया पहनती हैं।

ये चूड़िया मुसलमान चूड़ीगर बनाते हैं।

हिन्दुओं के बच्चे पतंग उड़ाते हैं।

ये पतंग मुसलमान कारीगर बनाते हैं।

मांझा भी वहीं सूतते हैं।

हिन्दुओं के लड़के पटाखे छोड़ते हैं।

ये पटाखे मुसलमान शोरगर बनाते हैं।

हिन्दुओं के मर्द दशहरे पर रावण का पुतला जलाते हैं।

रावण का पुतला मुसलमान बनाते हैं।

हिन्दू लहरिया और बंधेज के पाग-लहंगे पहनते हैं।

इन्हें मुसलमान रंगरेज रंगते हैं।

हिन्दू छापे की चादर खेस वापरते हैं।

इन्हें छापने का काम मुसलमान छीपे करते हैं।

हिन्दू उत्सवों पर अतिशबाजी करते हैं।

आतिशबाजी मुसलमान बनाते हैं।

एक के बगैर दूसरे के अस्तित्व की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

एक के बगैर दूसरा अधूरा है।

साम्प्रदायिकता के लिए हिन्दुओं को ही क्यों दोष दिया जाता है?

क्योंकि वे बहुसंख्यक हैं।

उनके व्यवहार में थोड़ा भी परिवर्तन आ जाये तो काफी बड़ा फर्क पड़ेगा।

लेकिन उन्हें जिम्मेदार आदमी की तरह सोचना पड़ेगा।

बहुसंख्यकों को अपनी साम्प्रदायिकता अक्सर दिखाई नहीं देती।

- हमारे रेडियो रोज सुबह-सुबह भजन प्रसारित करते हैं।
- सरकारी इमारत बनने की शुरुआत ही भूमिपूजन से होती है जिसमें

एक ब्राह्मण मंत्र पढ़ता है।

- मशीन, कारखाना, बांध, पुल जो भी हो, उसकी उद्घाटन की रस्म नारियल फोड़कर, सतिया बनाकर की जाती है।
- हमारा हर सांस्कृतिक कार्यक्रम दीप जलाकर, सरस्वती या गणेश या नटराज की फोटो या मूर्ति पर माला चढ़ाकर और संस्कृत की किसी स्तुति के साथ शुरू होता है।
- हमारे स्कूलों में सारे बच्चे हाथ जोड़कर 'प्रार्थना' गाते हैं।
- अधिकतर पुलिस लाइनों में मंदिर हैं जहां रोज शाम को आरती होती है।

और इन सारी क्रियाओं में हम उन्हें भी शामिल करना चाहते हैं जिनके धर्म में मूर्ति पूजा या एक ईश्वर के अलावा कहीं सिर झुकाना धर्म विरूद्ध आचरण माना जाता है। हम उनसे अपेक्षा करते हैं कि वे चुपचाप इस सब में भागीदारी करेंगे। वे उदासीन दिखाई देंगे तो हम उन पर अकारण संदेह करेंगे। या गली के गुण्डों की तरह उन्हें धमकी देंगे-'वन्देमातरम् कहना होगा। वरना भारत छोड़ना होगा।'

हिन्दुओं को किसने यह अधिकार दिया कि वह किसी भी कारण किसी को भी भारत छोड़कर जाने को कहें? और किसी को भारत छोड़ने पर विवश वे कैसे करेंगे? समुद्र में धक्का दे देंगे? या हवाई जहाज में टिकट कटा देंगे? या कोई ताकतवर ऋषि-मुनि अब भी कहीं बैठा है छिपकर, जो मंत्र पढ़कर इन्हें भस्म कर देगा?

क्या मुसलमानों का तुष्टीकरण हुआ है?

यदि मुसलमानों का तुष्टीकरण हुआ होता तो वे आज सम्पन्न, सुखी और सुशिक्षित होते। सच तो यह है कि कदम-कदम पर उन्हें हमारे सामाजिक जीवन से बाहर धकेलकर हाशिये पर फेंकने की ही कोशिशें हुई हैं।

- मुसलमानों को हिन्दुओं के मोहल्लों में कोई किराये पर मकान नहीं देता।
- कोई नयी कॉलोनी बनती है तो कोशिश यही की जाती है कि कोई मुसलमान उसमें मकान न खरीद सके।
- कॉलोनी सरकारी हो या प्रायवेट, कॉलोनी के भीतर मंदिर आसानी से बन सकता है, मस्जिद नहीं।
- नये कब्रिस्तान बनना तो दूर, मुसलमानों के पुराने कब्रिस्तानों की ज़मीन पर अतिक्रमण करने में किसी को ज्यादा संकोच नहीं होता।
- इंटरव्यू में समान योग्यता वाले चार प्रत्याशियों में से यदि एक मुसलमान है, तो उसका चयन न होना लगभग निश्चित है।
- फ़ौज, पुलिस और प्रशासनिक सेवाओं में एक प्रतिशत भी मुसलमान नहीं हैं।
- मुसलमान एक कुशल कारीगर कौम है। जिसे अपने अन्यायपूर्ण व्यवहार द्वारा धीरे-धीरे ज़रायम या आतंक की तरफ धकेला जा रहा है।
- हिन्दू-मुसलमानों का एक-दूसरे के घर जाना, शादी-ब्याह में शामिल होना और घुलना-मिलना दिन-ब-दिन शिक्षा और आधुनिकता की चेतना के साथ बढ़ने की बजाय कम होता जा रहा है। हिन्दुओं के बच्चों को मुसलमान बच्चों से दोस्ती करने पर हतोत्साहित किया जाता है।
- कोई मुसलमान किसी हिन्दू के घर आ जाये तो उसे कांच के या चीनी के बरतन में ही खिलाया-पिलाया जाता है।
- गांवों-कस्बों के होटलों में मुसलमानों के लिए अलग कप-गिलास रखे होते हैं जो उन्हें खुद उठाने-साफ करने पड़ते हैं।

क्या उर्दू मुसलमानों की भाषा है?

यह बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी है- और यह ग़लतफ़हमी हिन्दुओं में ही नहीं, मुसलमानों में भी है-कि उर्दू मुसलमानों की भाषा है।

सच यह है कि उर्दू एक भारतीय भाषा है जिसे एशिया से बाहर के मुसलमान समझते तक नहीं।

मुसलमानों में साक्षरता का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है, इसलिए भारत के मुसलमानों में भी उर्दू जाननेवालों की संख्या ज़्यादा नहीं।

शहरों और महानगरों में उर्दू जानने वाले मुसलमानों के बच्चे भी उर्दू नहीं, हिन्दी या अंग्रेजी पढ़ रहे हैं।

वैसे भी बंगाल का मुसलमान बंगाली, तमिलनाडु का मुसलमान तमिल और केरल का मुसलमान मलयालम बोलता है। महाराष्ट्र का मुसलमान मराठी और गुजरात का मुसलमान गुजराती बोलता है। ये लोग न उर्दू पढ़ सकते हैं न बोल सकते हैं न समझ सकते हैं।

उर्दू छावनियों और बाज़ारों से विकसित होने वाली एक भारतीय भाषा है। इसे इस्तेमाल करने वालों में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और दिल्ली तथा उत्तरप्रदेश के बहुत सारे हिन्दू रहे हैं और आज भी हैं। कायस्थों की तो ख़तो-किताबत की भाषा उर्दू ही रही है। यहां तक कि उर्दू के महान शायरों में अनेक हिन्दू रहे हैं जैसे फिराक गोरखपुरी, जगन्नाथ आजाद, रतननाथ सरशार, रामप्रसाद 'बिस्मिल,' सुदर्शन 'फाकिर,' कुंवर महेन्द्रसिंह बेदी 'सहर' और मुंशी श्याम नारायण 'चकबस्त।' आज के प्रसिद्ध फिल्मी गीतकार, निर्देशक और शायर गुलज़ार का भी असली नाम संपूरण सिंह है! इसी तरह उर्दू के प्रसिद्ध लेखकों में अनेक हिन्दू हुए हैं- जैसे मुंशी प्रेमचंद, क्रिशनचंदर, राजेन्द्रसिंह बेदी, सुरेन्द्रप्रकाश, रामलाल आदि।

इससे भी बड़ी ग़लतफ़हमी यह है कि मुसलमानों के प्रसिद्ध धर्मग्रंथ 'कुरआन शरीफ' की भाषा उर्दू है।

जबकि सच यह है कि कुरआन शरीफ की भाषा अरबी है जिसे भारतीय मुसलमानों का .001 प्रतिशत भी नहीं समझता होगा। रटने की बात और है, कुरआन शरीफ में लिखा क्या है, यह अधिकांश मुसलमान नहीं जानते। इसीलिए मौलवी उसकी मनमाफ़िक व्याख्या करते हैं।

यह ठीक वही बात है कि अधिकांश हिन्दू संस्कृत नहीं समझते। उन्हें नहीं मालूम कि धर्मग्रंथों में क्या लिखा है, इसलिए ब्राह्मण उनके इस अज्ञान का फ़ायदा उठाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं।

अज्ञान से ज्यादा ख़तरनाक कुछ नहीं

नीचे हमारे हिन्दू पाठकों के लिए पांच सरल प्रश्न और मुसलमान पाठकों के लिए पांच सरल प्रश्न दिये जा रहे हैं। देखें पाठक इनके सही उत्तर दे पाते हैं या नहीं?

हिन्दू पाठकों के लिए पांच प्रश्न

1. इस्लाम धर्म के संस्थापक का क्या नाम है?
2. मुस्लिमों के पवित्र स्थान मक्का और मदीना किस देश में हैं?
3. रमजान को पवित्र महीना क्यों माना जाता है?
4. मुहर्रम किसकी याद में मनाया जाता है?
5. मीठी सिवईंयां कब खायी जाती है? इंदुज्जुहा में या इदुलफितर में?

मुस्लिम पाठकों के लिए पांच प्रश्न

1. दीवाली का त्यौहार क्यों मनाया जाता है?
2. हनुमान जी की माता जी का नाम क्या था?
3. हिन्दू विवाह में अग्नि को साक्षी मानकर कितने फेरे लिए जाते हैं?

4. पहली बार बच्चे के सिर के बाल काटने को कौन-सा संस्कार कहा जाता है?

5. हिन्दुओं के प्रसिद्ध चार धाम कहां-कहां है?

यदि आप इन सवालों के सही जवाब दे पाये हैं तो इसका मतलब आप दूसरे धर्म के बारे में ठीक- ठाक जानते हैं। यदि आप पांचों प्रश्नों के सही जवाब नहीं दे पाये हैं, तो भी दुखी मत होइये। ये आपकी ही नहीं, सारे देश की समस्या है।

मुसलमान और हिन्दू एक ही देश, एक ही राज्य, एक ही शहर में रहते हुए, एक ही स्कूल में पढ़ते हुए या एक ही कार्यालय में बरसों से साथ काम करते हुए भी एक-दूसरे के बारे में बहुत कम जानते हैं।

मुसलमान फिर भी हिन्दुओं के बारे में काफी कुछ जान लेते हैं क्योंकि वह अखबारों में छपता रहता है, टी.वी. पर आता रहता है, फिल्मों में दिखाया जाता है, लेकिन हिन्दू तो मुसलमानों के बारे में बहुत ही कम जानते हैं। खास तौर पर हमारे बच्चे तो एक-दूसरे सम्प्रदाय के बारे में लगभग कुछ नहीं जानते।

इसलिए स्वार्थी तत्व दूसरे सम्प्रदाय के बारे में सही-गलत जो भी कहते हैं, वह मानने के अलावा हमारे पास कोई चारा ही नहीं होता।

मसलन 'मुसलमान चार-चार शादी करते हैं और बीस-बीस बच्चे पैदा करते हैं।'

इस कथन पर एक जानकार आदमी, कहने वाले को तुरंत ललकार सकता है- 'इस शहर में तुम एक ऐसा आदमी दिखा दो जिसने चार शादियां की हो और बीस बच्चे पैदा किये हों। चलो, उसका नाम ही बता दो तो मैं तुम्हें मान जाऊंगा।'

लेकिन जो नहीं जानता वो क्या करेगा? वो तो कहने वाले की बात सच ही मान लेगा न?

हम क्या कर सकते हैं?

आप यदि हिन्दू हैं तो आप अपने देश को गृहयुद्ध का मैदान, विस्फोटों का अड्डा या आतंक का आंगन न बनने देने के लिए ज़्यादा ज़िम्मेदार हैं। आप यह कर सकतें हैं-

- अपने स्कूल, कालेज, मंडी, दफ्तर, मोहल्ले या शहर में कम से कम एक मुसलमान दोस्त ज़रूर बनाइये।
- उसके घर जाइये, उसके परिवार के साथ मिलिए। उसे भी सपरिवार घर बुलाइये। उसके बच्चों को जन्मदिन पर तोहफे या बधाई दीजिए।
- उसके खान-पान, रहन-सहन, बोली-बानी, अचार-विचार, भय-परेशानी, नादानी-दानिशमन्दी आदि को ध्यान से देखिए।
- उसके धार्मिक रीति-रिवाजों, प्रथाओं-परम्पराओं, मिथक-इतिहास, भाषा-साहित्य, धर्मग्रंथों-तीर्थस्थानों आदि के बारे में पूछकर ज़्यादा से ज़्यादा मालूम करने की कोशिश कीजिए।
- उसे यकीन दिलाइये कि वह और उसका परिवार आड़े वक्त के लिए आप पर भरोसा कर सकता है।

साल भर बाद खुद से पांच सवाल पूछिए-

1. क्या आपका मुसलमान दोस्त गंदा है?
2. क्या वह कट्टर है?
3. क्या वह धर्मान्ध है?
4. क्या वह गद्दार है?
5. क्या वह आतंकी है?

आप यदि मुसलमान हैं तो अपने शहर में अमन रखने, अपने घर वालों को दंगे की आग से बचाने और अपने बच्चों को एक खुशहाल भविष्य देने की जवाबदारी आपकी भी है। आप यह कर सकते हैं-

1. कोई ऐसा काम न करें, ना ही करने दें, जिससे किसी की धार्मिक भावनाएं आहत हों।
2. अन्याय को चुपचाप न सहें। आज़ाद लोकतंत्र के जागरूक नागरिक की तरह अपनी बात खुलकर कहने के लिए प्रेस, रेडियो, टीवी, उपभोक्ता फोरम, लोक अदालत, न्यायालय का उपयोग करें।
3. मुल्ला–मौलवियों के बेहूदा और अविवेकपूर्ण फतवों और फरमानों को न मानें।
4. अपने घर–परिवार और परिवेश में वैज्ञानिक सोच और आधुनिकता को प्रोत्साहित करें।
5. अफवाहों पर विश्वास न करें।

साल भर बाद खुद से पांच सवाल पूछिए -

1. क्या मेरे हिन्दू दोस्त मुझे नीचा समझते हैं और नफ़रत करते हैं?
2. क्या वे किसी भी तरह मेरे और मेरे परिवार के सुखद भविष्य में रोड़े अटका रहे हैं?
3. क्या वे चाहते हैं कि मैं और मेरा परिवार भारत छोड़कर कहीं और चले जायें?
4. क्या इनके बीच रहने से मेरा धर्म और संस्कृति सुरक्षित नहीं है?
5. क्या मैं आड़े वक्त में मदद के लिए इस परिवार पर भरोसा कर सकता हूं?

दिल से सवाल पूछिये। जवाब जरूर मिलेगा।

क्या साम्प्रदायिकता सिर्फ हिन्दू–मुसलमान का मामला है?

नहीं।

- हिन्दुओं में भी शैव और वैष्णव आपस में लड़ते रहे हैं।

- जैन मुनियों के बारे में कहा जाता है कि वे जहां चौमासा करते हैं, वहां बारिश नहीं होती।
- मुसलमान के दो सम्प्रदाय शिया और सुन्नी भी आपस में लड़ते हैं।
- ईसाईयों में भी रोमन केथोलिक और प्रोटेस्टेंट आपस में लड़ते रहे हैं।
- इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद हिन्दुओं ने अनेक सिक्खों को मार डाला था ।

बहुसंख्यक, अल्पसंख्यकों को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाकर रखना चाहते हैं। ताकि विकास का पूरा लाभ सिर्फ उन्हें मिल सके।

क्या यह ठीक है?

अपने ही शरीर का एक हाथ तोड़कर या मरोड़कर अपनी ही जनसंख्या के एक हिस्से को पिछड़ा रखकर

क्या कोई महाशक्ति बन सकता है?

***

दूसरा वनवास

राम बनवास से जब लौट के घर में आये
याद जंगल बहुत आया, जो नगर में आये
छह दिसम्बर को शिरीराम ने सोचा होगा
इतने दीवाने कहां से मेरे घर में आये

जगमगाते थे जहां राम के कदमों के निशां
प्यार की कहकशां लेती थी अंगड़ाई जहां
मोड़ नफ़रत के उसी राहगुज़र में आये

धर्म क्या उनका था, क्या ज़ात थी, ये जानता कौन
घर न जलता तो उन्हें रात में पहचानता कौन
घर जलाने को मेरा, लोग जो घर में आये

शाकाहारी हैं मेरे दोस्त तुम्हारे खंजर
तुमने बाबर की तरफ फेंके थे सारे पत्थर
है मेरे सर की ख़ता, ज़ख्म जो सर में आये

पांव सरजू में अभी राम ने धोये भी न थे
के नज़र आये वहां खून के गहरे धब्बे
पांव धोये बिना सरजू के किनारे से उठे
राम ये कहते हुए अपने दुआरे से उठे

राजधानी की फिजां आयी नहीं रास मुझे
छह दिसम्बर को मिला दूसरा वनवास मुझे

कैफ़ी आज़मी
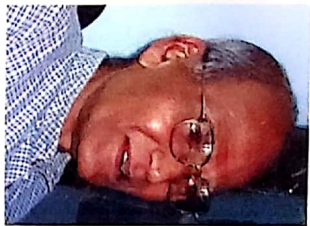
स्वयं प्रकाश

जन्म - 20 जनवरी 1947

हिन्दी के चर्चित कथाकार और उपन्यासकार। अनेक कहानी संग्रह और उपन्यास प्रकाशित। बच्चों के लिए भी कविता, नाटक इत्यादि लिखे हैं। अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित। फिलहाल प्रगतिशील लेखक संघ की पत्रिका प्रगतिशील वसुधा के संपादक।

संपर्क - 3/33 ग्रीन सिटी, ई-8, त्रिलंगा, भोपाल-462039
Phone - +91-0755-2562960
Mobile - +91- 94250-18290

भारत ज्ञान विज्ञान समिति
www.bgvs.org. bgvsdelhi@gmail.com